

क्या परमेश्वर है? हां, वरना हम

जीवन

की व्याख्या कैसे कर सकते हैं

हमारे भीतर तथा आसपास कुछ ऐसा है जिसे “जीवन” कहा जाता है। यह है क्या, कोई नहीं जानता। एक शिक्षक के प्रश्न कि “जीवन क्या है” के उत्तर में कक्षा में सोने वाले एक लड़के ने कहा, “मुझे पता तो था, पर भूल गया हूं।” शिक्षक का उत्तर था, “कितने दुख की बात है! एक ही व्यक्ति था जिसे पता था कि जीवन क्या है और वह भी भूल गया है।” जीवन की उपस्थिति के चिह्नों (जैसे, उपपाचन, विकास, प्रजनन) में देखा जा सकता है, परन्तु इसकी सही-सही प्रकृति एक पहेली ही है। *इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना* में कहा गया है, “जीवन की कोई भी परिभाषा अभी तक संतोषजनक सिद्ध नहीं हुई है।” चार्ल्स डार्विन के संसार के आस-पास की प्रकृति के अध्ययन के बाद,² उसके पुत्र प्रोफेसर जॉर्ज डार्विन ने टिप्पणी की थी, “जीवन का रहस्य अभी भी ज्यों का त्यों ही है।”³ लॉर्ड केल्विन ने अपने साथी वैज्ञानिक बेरन जस्टुस वॉन लेबिग से रासायनिक शक्ति से घास उगाने के लिए कहने पर उत्तर मिला “जीव विज्ञान की पुस्तकों से बाहर नहीं।”

यद्यपि जीवन की आंशिक परिभाषा दी जा सकती है, परन्तु इसमें इसका आदर करने की आज्ञा है और इससे लोगों के मन जीवन देने वाली उस शक्ति की ओर मुड़ने चाहिए।

जैसे पहले कहा गया था, कि बनाने वाले को माने बिना तत्व के अस्तित्व की व्याख्या करना असम्भव है। सेब का पेड़ बनाने वाले की कल्पना न करें तो यह एक रहस्य बन जाता है। सेब बनाने वाले रासायनिक तत्व अपने आप ही नहीं बन गए, और सेब के बीज में कुछ ऐसा है जिसे विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान नहीं बता सकता है। उस छोटे से बीज को अंकुरित होने और अपनी जड़ें मिट्टी के अन्दर तक ले जाने की कहीं से सामर्थ्य मिलती है। जड़ों के जकड़ने के काम के अलावा, कोई उन्हें पानी और पोषक पदार्थ सोख लेने की योग्यता देता है। कोई शक्ति है जो जड़ों को उस ओर भेजती है जहां बहुत सा जल है।

उसी छोटे से बीज में अंकुरित होकर पृथ्वी से बाहर निकलकर सूर्य के प्रकाश में ऊपर जाने की शक्ति है। उसके ऊपर की ओर बढ़ने से शाखाओं व पत्तियों में भूमि से बहुमूल्य और आवश्यक तरल पदार्थ गुरुत्वाकर्षण के विपरीत ऊपर ले जाते हैं। कोई शक्ति है जो पत्तों को एक रासायनिक फैक्टरी बनाती है जिससे वे सूर्य के प्रकाश का इस्तेमाल करके कार्बनडाईऑक्साइड निकालते हैं। कार्बन का इस्तेमाल कार्बोहाइड्रेट बनाने में होता है

जिससे सेब बनता है। सेब को बड़ी सफाई से पैक करना भी अपने आप में आसान काम नहीं है। अन्त में, किसी शक्ति ने सेब की फैक्टरी से भविष्य में और ऑर्डर लेने के लिए उसमें नये बीज डालने का विचार किया!

केवल पदार्थ के अस्तित्व से पौधे के जीवन के अस्तित्व तक ऊपर आने और वहां से कीड़े के जीवन तक, सबसे बड़ी मांग एक सक्षम, बुद्धिमान सृष्टिकर्ता की होती है। उदाहरण के लिए, एक छोटा सा निर्बल, कीट जो केवल हिलडुल ही सकता है, किसी न किसी तरह अपने आपको उड़ने वाली एक निपुण मशीन में बदल लेता है, जिसमें एन्टीना, गतिसूचक यन्त्र और पंख लगे हुए होते हैं।¹⁴ वह अद्भुत हवाई जहाज़, जो हमारे देखने से भी अधिक तेजी से उड़ता है, छह टांगों से हवाई पट्टी पर आधा चक्र लगाकर ऊपर नीचे उड़ता है। वहां से, वह रन वे के बिना ही एकदम उड़ान भर सकता है। मक्खी की वैमानिक योग्यता की तरह ही वैज्ञानिक लारवा से प्यूपा और प्यूपा से वयस्क बनने में आने वाले बदलाव को समझ नहीं सकते। जब वे अजन्मे “भ्रूणों” या “डी. एन. ए. कोर्स से निर्देशों” की बात करते हैं तो वे कह रहे होते हैं कि जितना वे समझ सकते थे समझ गए हैं, और “परमेश्वर” शब्द का इस्तेमाल करने के अलावा उनके पास कोई उत्तर नहीं है।

हजारों उदाहरणों में से एक उदाहरण साइकेला (एक कीट) का है जिसे आम तौर पर “सत्रह वर्ष की टिट्टी” कहा जाता है। साइकेलाओं के विभिन्न चक्र होते हैं, जिनमें सत्रह वर्ष का होना सबसे लम्बा है। लगभग हर सत्रहवें वर्ष 24 मई के दिन, ये कीड़े सत्रह वर्ष के जीवन के बाद बाहर आने के लिए अठारह इंच तक भूमि के अन्दर से (हिम रेखा के नीचे से) ऊपर चढ़ते हैं। बाहर आने पर भी वे प्लास्टिक जैसी एक संरक्षक भूमिगत झिल्ली में ढांपे हुए होते हैं। उस पारदर्शी झिल्ली को उतारने के बाद, पंख जिनका पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया गया, हवा में सुखाए जाते हैं। संग के बाद तीखे दांतों वाली मादा अण्डों और पेड़ के बीच तक तीन चौथाई शाखा को काटती है। शाखा सूखकर साइकेला के अण्डों समेत भूमि पर गिर जाती है। अण्डों से निकलकर लारवा भूमि में जाकर फिर से सत्रह वर्ष का चक्र आरम्भ कर देता है। वयस्क साइकेला केवल तीन सप्ताह जीवित रहते हैं और कभी अपने बच्चों को नहीं देख पाते। उन्हें ऐसा करने के लिए कौन कहता है? पृथ्वी के बाहर अपने तीन सप्ताह के इस जीवन में वे पक्षियों से बचाव के लिए एक असहनीय आवाज करते हैं। प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी ऑडिटरी रिसर्च लैबोरेट्री के डॉक्टर ए. जेम्स सिम्म्न्स कहते हैं कि वह तेज शोर साठ फुट दूर से अस्सी से एक सौ डेसिबल तक मापा जा सकता है। यह आवाज़ कान के पर्दे को हानि पहुंचाती है जिस कारण पक्षी व दूसरे जानवर उनसे दूर रहते हैं। किसने इस साइकेला को छोटी सी मांसपेशी दी जो “आवाज़ निकलने” से थोड़ी देर पहले ही उसके कान के पर्दे को अपने आप बन्द कर देती है। वैज्ञानिक यह तो जानते हैं कि वह मांसपेशी कैसे काम करती है, परन्तु वे इस बात का पता नहीं लगा पाए कि साइकेलाओं की एक पीढ़ी को बसन्त ऋतु में संग करने और अपनी प्रजाति को बचाए रखने की बात किसने बताई, न ही वे यह समझ सकते हैं कि सत्रह वर्ष के अजन्मे पंचांग क्या हैं जिन्हें साइकेला अपने साथ भूमिगत कर लेता है।

जीवन का ऐसा ही एक और रहस्यमयी रूप पक्षियों में देखा जाता है। फाखाओं में, चौदह से उन्नीस दिन तक दिन को नर और रात को मादाएं अण्डे सेती हैं। यदि फाखाएं केवल रसायनों का थैला ही है, तो कोई हैरान हो सकता है कि वे लगभग एक माह तक अपने आपको स्वतन्त्रता से वंचित क्यों रखते हैं। सम्राट पेंगविनों (उड़ानहीन सामुद्रिक पक्षी) में केवल नर ही बिना कुछ खाए साठ दिन तक अण्डे सेता है। इसकी रासायनिक व्याख्या तो बहुत ही दिलचस्प होगी। किसी को पता नहीं कि एकांत में पले, कैनरी (कैनरी द्वीप की गायक चिड़िया) अपने पूर्वजों की तरह वैसा ही घोंसला कैसे बना लेते हैं। प्रयोगशाला में यह विश्लेषण नहीं किया जा सकता कि कैलिफोर्निया के सान जुआन कैपिट्रेनो के अबाबील सर्दी बिताने के लिए अक्टूबर 23 के आस-पास मिट्टी के अपने घोंसले छोड़कर दक्षिण में मार्च 19 को वापस क्यों लौट जाते हैं। सैंडिनेविया के वारब्लर (पक्षी) अपने आप ही पतझड़ के समय दक्षिण अफ्रीका में चले जाते और बसन्त में लौट आते हैं, चाहे यह उनका पहला प्रवास ही क्यों न हो।

करकरी पक्षियों की आर्कटिक से अन्टार्कटिका तक की 7200 मील की सबसे लम्बी प्रवासी उड़ान लगती है। “उनकी इस योग्यता का रहस्य अभी तक किसी को पता नहीं है।”⁵ अनुमान लगाए जाते हैं कि उनमें “चुम्बकीय भावना” हो सकती है या उनकी यात्राएं “उनके वंशानुगत इतिहास में बार-बार होने वाली घटना के कारण” हो सकती हैं या यह कि वे किसी “पूर्वज के घर” लौट रहे होते हैं। ये अटकलबाजियां केवल वैज्ञानिक छटपटाहट हैं। 12^{1/2} दिन पहले छोड़ गए एक मैक्स शियरवाटर की 3200 मील दूर मैसाचुएट्स के वेल्स में अपने घोंसले में फिर से आ जाने का नावकीय (समुद्री यात्रा का) ज्ञान किसी इन्साना नाविक को नहीं दिया गया। परमेश्वर में विश्वास रखने वाला व्यक्ति जानता है कि इन पक्षियों को दिशा और समयसारणी कौन देता है, परन्तु किसी भी भौतिकवादी के पास इसका कारण नहीं है।

वास्तव में, छोटे जानवरों या पौधों में जीवन की बात हो या बड़े जानवरों में जीवन की, इसे समझा नहीं जा सकता है। जबकि जीवन का प्रत्येक उच्च रूप अलग ढंग से सिद्ध करता है कि जिसने इसे बनाया वह अपने आप में जीवन का और बड़ा रूप है।

उदाहरण के लिए, 180 पौंड (लगभग 81.72 किलो) के सेंट बर्नार्ड कुत्ते पर विचार करें जिसने अपनी मालकिन की जान बचाने के लिए अपने आपको जोखिम में डाल दिया। अप्रैल 1969 में अलास्का राज्य के दिनाली में श्रीमती डेविड ग्रेटियास ने घर के पिछले आंगन में शोर सुना। 81.72 किलो के अपने कुत्ते को खुला छोड़कर वह बाहर जाते समय दरवाजा खुला छोड़ गई ताकि यदि उसकी दो साल की बच्ची उठ जाए तो उसकी आवाज उसे सुन सके। घर के पिछले आंगन में उसे भूरे रंग का भालू का एक बच्चा दिखाई दिया। यह सोचकर कि उसकी मां कहीं आस पास ही होगी, वह अपने बच्चे के पास भागी, परन्तु घर के कोने पर उस शावक की मां ने उसे काट लिया। वह बर्फ पर गिर गई; और उसके गिरते ही खूंखार भालू ने उस पर आक्रमण कर दिया। भय तथा खून निकलने के कारण बेहोश होने से पहले, उसने अपने कुत्ते को भालू को ललाकारते देखा था। बड़ी चतुराई से

कुत्ता उस गिरी हुई महिला और भालू के बीच आ गया। अन्त में, भालू उसे छोड़कर भाग गया। होश आने पर उस स्त्री ने देखा कि कुत्ता उसका मुंह चाट रहा है १ यदि किसी की फिलॉसफी केवल यान्त्रिक नियतिवाद तक ही सीमित है, तो वह यह नहीं समझा सकता कि 81.72 किलो का रसायन ऐसा कैसे कर पाया। वफादारी और साहस कार्बन और कैल्शियम के क्षेत्र से बाहर हैं।

उन 81.72 किलो रसायनों में जीवन आने का प्रश्न सचमुच गंभीर है। अधिकतर वैज्ञानिक कहते हैं कि वे मूलतः आदिकालीन तालाबों में भरे हुए जैविक अणु थे। फिज़ियोकेमिकल प्रतिक्रिया से गुजरकर वे जीवित जैली या फड़कने वाला कचरा बन गए और अकस्मात् ही जीवद्रव्य सैल में विकसित हो गए। वैज्ञानिकों की शब्दावली व्यापक तो बहुत है, पर उनके पास कोई प्रमाण नहीं है। परमेश्वर में विश्वास रखने वाला एक जीव विज्ञानी, जीन रोस्टेण्ड देखता है कि उनकी यह स्थिति कितनी डांवांडोल है: “मुझे अभी भी संदेह है कि उन मोलिक्यूलस (अणुओं) में जिन्हें वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में इस्तेमाल करता है जीवन और विचार देने की क्षमता है।” उन्हें चाहिए कि हमें बताएं कि आदिकालीन तालाब कैसे अस्तित्व में आए और ऑर्गेनिक अणु वहां पर कैसे बने। वे तालाब और अणु या तो शून्य से आए, या उन्हें किसी ने बनाया था।

और, जैसे पदार्थ किसी के बनाए बिना नहीं बन सकता, वैसे ही पदार्थ में जीवन भी वही देता है, जो जीवित है। यदि उस सर्वोत्तम अस्तित्व वाले में तत्व या पदार्थ में प्राण डाल सकने की सामर्थ्य है, तो वह स्वयं एक जीवित प्राणी होने से कम नहीं हो सकता।

पाद टिप्पणियां

¹इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना, 1954 s.v. “लाइफ़।” ²चार्ल्स डारविन (1809–1882) एक अंग्रेज़ प्रकृतिवादी था जिसने प्राकृतिक चयन से विकास की थ्योरी बनाई। उसने एक प्रसिद्ध और विवादास्पद पुस्तक *ओरिजन ऑफ़ स्पेसीज़* लिखी। ³सिडनी कोलेट, *ऑल अबाउट द बाइबल* (न्यूयॉर्क: फ्लेमिंग एच. रेवल कं.), 212. ⁴रुद्रफोर्ड प्लैट, “दोज़ रिमार्केबल ‘टू-एनिमल’ एनिमल्लज़स” *रीडर’ज़ डाइजेस्ट* (जुलाई 1970): 33–40. ⁵इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका (1969 सं.), सी. बी. विलियम्स की “माइग्रेसन, एनिमल।” ⁶*डेली ओक्लाहोमन*, 18 अगस्त 1970, 12. ⁷जीन रोस्टेण्ड, ए. *बायालोजिस्ट’स व्यू*, (मेलबोर्न, विलियम हेनमन, लि., 1956), 23. *Ce Que Je Crois* (पैरिस: एडिशनज़ बर्नार्ड ग्रैसट) से अनुदित।